12

''थर्ड वेव'' लहर

पवित्र आत्मा पर हमारी शृंखला के अन्तिम पाठ में एक नई करिश्माई लहर के बढ़ने पर ध्यान दिया गया है। इस प्रवृत्ति के विरुद्ध मिलने वाली चेतावनियों की ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। यह लहर जो स्पष्टतया 1980 के दशक में आरम्भ हुई, ''चिह्नों और अचम्भों की लहर'' या ''पवित्र आत्मा की तीसरी लहर'' के रूप में प्रसिद्ध है। पहली ''लहर'' पैंटिकॉस्टल मूवमैंट थी, दूसरी करिश्माई मूवमैंट थी और तीसरी मूवमैंट अर्थात लहर को कुछ लोग ''चिह्नों, अद्‌भुत कामों और आश्चर्यकर्मों में दिखाया गया पवित्र आत्मा का नये ढंग से काम'' कहते हैं। इस नई लहर में कई लोगों ने किसी कारण कालांतर की करिश्माई लहरों को ठुकराया है, परन्तु अब इस ''थर्ड वेव'' लहर को अपना रहे हैं। यह उन लोगों के लिए जो नये नियम की शिक्षाओं का प्रचार करते हैं एक और चुनौती है।

अधिकार के रूप में काल्पनिक अनुभव

''थर्ड वेव'' लहर से जुड़े कुछ लोग दावा करते हैं कि उन्होंने स्वयं बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म होते देखे हैं। उनका दावा है कि इक्कीसवीं शताब्दी की कलीसिया में पवित्र आत्मा की सामर्थ के नये सिरे से दिए जाने के प्रमाण हैं। हाल ही में इस लहर पर एक किताब में दावा किया गया है कि पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्मों में विश्वास न करने वालों ने कभी कोई आश्चर्यकर्म होते देखा ही नहीं। पुस्तक के लेखक ने अपने विश्वास को उचित ठहराने के लिए कि पवित्र आत्मा आज कलीसिया में आश्चर्यकर्मों के द्वारा काम करता है, अपने हाल ही के निजी अनुभवों को बताया है। कुछ बातों से करिश्माई (पहली, दूसरी या तीसरी लहर) की मूल कमज़ोरी का पता चलता है, जिसमें बाइबल की शिक्षा से बढ़कर काल्पनिक अनुभवों के अधिकार पर अधिक ज़ोर दिया जाता है। व्यक्तिगत अनुभव हों या न हों, उनसे कभी यह तय नहीं होना चाहिए कि हम क्या विश्वास करते या नहीं करते! बिना व्यक्तिगत अनुभव के मसीहियत बेजान धर्म है, पर पवित्र आत्मा ने यह चेतावनी दी है कि हमें ''सच्चाई के प्रेम'' से बढ़कर अपने अनुभवों पर भरोसा नहीं करना चाहिए। जो ऐसा करते हैं ''परमेश्वर उन में एक भटका देने वाली सामर्थ को भेजेगा ताकि वे झूठ की प्रतीति करें। और जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, वरन अधर्म से प्रसन्न होते हैं'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:11, 12)। इस आयत का संदर्भ शैतान के ''सामर्थ और चिह्नों और झूठे अचम्भों'' (तुलना आयतें 7-10) के बढ़ने के द्वारा दिखाए गए ''धर्म का रहस्य'' पर चर्चा है। आज के धार्मिक संसार में होने वाली बातों को इस आयत में दी गई

चेतावनियों के पूरा होने के रूप में देखा जा सकता है। आइए हम गम्भीरतापूर्वक प्रभु की बातों को याद रखें कि ''इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिह्न ढूंढते हैं'' (मत्ती 12:39)। अधिकतर लोग यह मानते हैं कि हम ''बुरे और व्यभिचारी'' लोगों में रहते हैं, जिस कारण हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि आज हम ''चिह्नों के भूखे'' लोगों से घिरे हैं, जो धार्मिक अनुभवों के द्वारा शारीरिक अभिलाषाओं को पूरा करना चाहते हैं।

''चिह्नों और अद्‌भुत कामों की लहर'' की मुख्य गलती आश्चर्यकर्मों के चिह्नों के मूल उद्देश्यों को न समझना है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है कि परमेश्वर ने अपनी प्रेरणा से बोलने वाले वक्ताओं के द्वारा ''अपनी इच्छा के अनुसार चिह्नों, और अद्‌भुत कामों और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही'' दी (2:4)। यूहन्ना ने भी यीशु के आश्चर्यकर्मों के बारे में ऐसी ही घोषणा की जब उसने लिखा, ''यीशु ने और भी बहुत चिह्न चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए, परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ'' (यूहन्ना 20:30, 31)।

यीशु और आरम्भिक कलीसिया के जीवन में आश्चर्यकर्मों के होने के दो महत्वपूर्ण कारण थे। पहला, आत्मा की प्रेरणा के द्वारा परमेश्वर का वचन आश्चर्यकर्मों के द्वारा प्रकट किया जाना था। दूसरा, परमेश्वर का वचन सुनाने वालों को किए जाने वाले कामों से सच्चे वक्ता के रूप में पहचाना जाना था। इस विषय पर सावधानीपूर्वक विचार करें, ''क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)। एकमात्र वक्ता जिन पर हम पूरी तरह से भरोसा कर सकते हैं ''प्रेरित और भविष्यवक्ता'' हैं जिनकी परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई शिक्षाएं नये नियम में लिखी गई हैं। केवल यही लेख वह आधार उपलब्ध कराते हैं जिन पर हमारे प्रभु की कलीसिया बनी है (इफिसियों 2:20)। पौलुस ने कहा कि ''मसीह का वह भेद ... आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया गया है'' (इफिसियों 3:4, 5)। यह दावा करना कि प्रभु आज भी लोगों पर अपना वचन आश्चर्यकर्म के द्वारा प्रकट कर रहा है कि यह कहना है कि नये प्रकाशनों के मिलने से हमारे नीचे से कलीसिया की नींव ही हिलती जा रही है। सच्चाई यह है कि पहली शताब्दी के प्रेरित और भविष्यवक्ता परमेश्वर की प्रेरणा से बोलने वाले अकेले वक्ता थे जिनके द्वारा विश्वास ''पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3)। आज नई सच्चाइयों के प्रकाशन की आवश्यकता नहीं है। यही बात वचन को पक्का करने के लिए आश्चर्यकर्मों से होने वाले चिह्नों की है।

कुछ लोग दावा करते हैं कि परमेश्वर ने कलीसिया को मजबूत करने के लिए आत्मिक दान दिए हैं। वे बहस करते हैं कि आज कलीसिया को मजबूती आवश्यकता है, इसलिए परमेश्वर आज भी वही आश्चर्यकर्म कर रहा है जो उसने पहली शताब्दी में किए थे। ऐसे तर्कों में एक मूल कमी रह जाती है। कलीसिया को मजबूती आत्मिक दानों से नहीं मिली थी बल्कि यह तो उन दानों के द्वारा प्रकट किए गए परमेश्वर के वचन के द्वारा मज़बूत हुई। पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के एल्डरों से कहा था, ''और अब मैं तुम्हें परमेश्वर

को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं; जो तुम्हारी उन्नति कर *सकता है,* और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है'' (प्रेरितों 20:32)।

अधिकार के रूप में परमेश्वर का वचन

परमेश्वर का वचन कलीसिया को बनाने और आत्मा का फल उपजाने के लिए आत्मिक भोजन उपलब्ध करवाता है। यह बात पहली सदी में भी सच थी, और आज भी सच है। यीशु में बने रहने और उसके वचन को अपने में बने रहने की अनुमति देकर हम बहुत सा फल लाते हैं (यूहन्ना 15:4-8)। परमेश्वर के वचन का सम्मान करके और उसकी आज्ञाओं का पालन करके हम उसके प्रेम में बने रहते हैं (यूहन्ना 15:10)। मसीही जीवन कुल मिलाकर प्रेम ही तो है।

परमेश्वर का वचन और भविष्यवाणी का दान

आत्मिक दानों ने ईश्वरीय माध्यम का काम किया जिसके द्वारा परमेश्वर ने कलीसिया पर अपना वचन प्रकट किया। कलीसिया के बनाए जाने के समय में विश्वासी भाइयों के पास परमेश्वर के लिखित वचन का सम्पूर्ण प्रकाशन वैसे नहीं था जैसे आज हमारे पास है। वे परमेश्वर की सच्चाइयों के प्रकट किए जाने के लिए प्रेरितों और ''भविष्यवाणी के दान'' पर निर्भर थे। कलीसिया के इकट्ठा होने पर, पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन को प्रकट करने के लिए भविष्यवाणी के दान के द्वारा काम करता था। ऐसे ईश्वरीय प्रकाशनों से कलीसिया को परमेश्वर तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम में बढ़ने में सहायता मिली। इसी लिए पौलुस ने कुरिन्थुस के भाइयों से ''प्रेम का अनुकरण'' करने ''और आत्मिक वरदानों की धुन में'' रहने, *''विशेष करके भविष्यवाणी''* करने की करने के लिए कहा (1 कुरिन्थियों 14:1)। भविष्यवणी का दान दूसरे आत्मिक दानों से बढ़कर था क्योंकि भविष्यवाणी के द्वारा परमेश्वर का जीवनदायक वचन कलीसिया की मजबूती के लिए दिया जाता था।

परमेश्वर का वचन और उसका प्रकट प्रेम

भविष्यवाणी के दान के द्वारा, परमेश्वर ने मनुष्य पर आना प्रेम प्रकट किया। परमेश्वर के संतान द्वारा प्रेम को समझने और उसे व्यवहार में लाने से कलीसिया में आत्मिक प्रौढ़ता और मज़बूती आई (1 कुरिन्थियों 8:1)। इस प्रकार आत्मिक दान लक्ष्य पाने का साधन थे। लक्ष्य कलीसिया को प्रेम में दृढ़ करना था। इस लक्ष्य को पाने का माध्यम आश्चर्यकर्म के चिह्नों के द्वारा दिया और पक्का किया गया परमेश्वर का प्रकाशन था। पौलुस ने कलीसिया को आश्वासन दिया कि जब सर्वसिद्ध (सम्पूर्ण) भविष्यवाणी (परमेश्वर का प्रकाशन) मिलेगा, तो जो अधूरा है वह जाता रहेगा (तुलना 1 कुरिन्थियों 13:9, 10)। अन्य शब्दों में, मसीह की देह को बनाने के लिए सच्चाई के सम्पूर्ण प्रकाशन मिलने पर वचन को पक्का करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले भविष्यवाणी और आश्चर्यकर्मों के चिह्नों के दान का ईश्वरीय उद्देश्य पूरा हो जाएगा। इसी दौरान पौलुस ने अध्याय 13 में कलीसिया की

संसारिकता की बात की। उसने बताया कि वे बच्चे और अपरिपक्व थे अर्थात उन्हें अपने बचकाना और स्वार्थी ढंगों को छोड़कर, अपने प्रेम में वयस्क हो जाना चाहिए था।

परमेश्वर का वचन-बदलने की सामर्थ

पौलुस आश्वस्त था कि परमेश्वर का वचन अर्थात प्रभु की महिमा दिखाने वाला आत्मिक दर्पण, उन्हें उसी के स्वरूप में ''उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदल'' सकता है (2 कुरिन्थियों 3:18)। अपने मनों को परमेश्वर के वचन (आत्मिक दानों नहीं) पर लगाकर उन्हें यीशु का प्रेम तब तक ''धुंधला सा'' जैसे दर्पण में तब तक दिखाई देना था जब तक वे उसके प्रेम को ''आमने सामने'' न देख लेते। उस दिन, ''[हम] ऐसी रीति से पहचानेंगे, जैसे [हम] पहचाने गए हैं'' (1 कुरिन्थियों 13:12)। आज ''थर्ड वेव'' वालों की बात मानकर आश्चर्यकर्मों के दानों का पीछा करने के बजाय, पौलुस परमेश्वर और अनुग्रह के उसके वचन का पीछा करने के लिए हमारी सराहना करेगा *जो* प्रेम के ''और भी सबसे उत्तम मार्ग'' में *बना सकता है* (1 कुरिन्थियों 12:31)।

सारांश

इस तथ्य का कि प्रभु अब प्रेरितों के द्वारा दिए गए चिह्नों और अद्‌भुत कामों से आश्चर्यकर्मों के द्वारा अपना वचन प्रकट करके पक्का नहीं करता है, अर्थ यह नहीं है कि अब वह अपनी कलीसिया में काम नहीं करता है। परमेश्वर न करे कि हम ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचें! अपनी कलीसिया को दी गई यीशु की प्रतिज्ञाएं उतनी ही सच हैं जितनी पहले थीं। परमेश्वर की संतान उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा रखती है कि हमारे साथ उसकी शान और सामर्थपूर्ण उपस्थिति है (मत्ती 28:20)। हम में से हर कोई पूरी दिलेरी के साथ कह सकता है, ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)। आज भी यह सच है कि हमें ''भीतरी मनुष्य में उसके आत्मा के द्वारा सामर्थ से मजबूत किया जाता है ... ।'' और यह कि वह ''ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य्य करता है'' (इफिसियों 3:16, 20)। ''धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है'' (याकूब 5:16)।

पहली शताब्दी के आश्चर्यकर्मों के दान पाप के अंधकारमय जगत में परमेश्वर के वचन की रौशनी फैलाने के लिए दिए गए थे। एक बार इस उद्देश्य के पूरा हो जाने के बाद पवित्र आत्मा से आश्चर्यकर्म के दानों की और आवश्यकता नहीं थी। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के पास अब सामर्थ नहीं है या उसने अपने पुत्र की कलीसिया से अपनी पवित्र उपस्थिति को हटा लिया है। हमारा परमेश्वर वही भयदायक परमेश्वर है जो हमेशा से है और जैसे यिर्मयाह ने कहा था, ''तेरे लिए कोई काम कठिन नहीं है'' (यिर्मयाह 32:17)। ''उसकी सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं'' (इफिसियों 1:19) आज उन लोगों के लिए है जो विश्वास में उसके साथ चलते हैं। उसी परमेश्वर पर जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, भरोसा किया जा सकता है कि ''अपने उस धन के अनुसार जो

महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी एक घटी को पूरी करेगा। हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन'' (फिलिप्पियों 4:19, 20)।

कुछ यूनानी शब्दों का अध्ययन

''**चिह्न**'': आम तौर पर ''चिह्न'' अनुवाद किया जाने वाला यूनानी शब्द *semeion* सुसमाचार के चारों वृत्तांतों में अड़तालीस बार मिलता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में यह तेरह बार, जिसमें ग्यारह बार पहले आठ अध्यायों में ही है। नये नियम की शेष तेइस पुस्तकों में, इस शब्द का इस्तेमाल केवल सोलह बार हुआ है। उनमें से कई बार इसे वास्तविक अर्थात पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म के कार्य के बजाय शैतान के कार्य के लिए बताया गया है (तुलना 2 थिस्सलुनीकियों 2:9; प्रकाशितवाक्य 13:13, 14; 16:14; 19:20)। इन आंकड़ों से क्या संकेत मिलता है? यह स्पष्ट है कि पहली शताबदी में आश्चर्यकर्म का कार्य्य यीशु की सेवकाई और प्रेरितों की आरम्भिक सेवकाई में बहुत अधिक था। पहली शताब्दी के खत्म होते होते आश्चर्यकर्म का कार्य भी घटने लगा था।

''**अद्‌भुत काम**'': *Teras* जिसका अनुवाद ''अद्‌भुत काम'' हुआ है, सुसमाचार की पुस्तकों में तीन बार, जिसमें से दो बार झूठे अद्‌भुत कामों के लिए हुआ है (मत्ती 24:24; मरकुस 13:22)। प्रेरितों के काम की पुस्तक में यह नौ बार आता है जिसमें इसका अधिकतर हवाला प्रेरितों द्वारा किए जाने वाले अद्‌भुत काम हैं। पत्रियों में यह शब्द केवल चार बार आता है। परमेश्वर की सामर्थ यीशु मसीह के सुसमाचार में है (रोमियों 1:16) न कि चिह्नों और पवित्र आत्मा के अद्‌भुत कामों में! जब कोई कलीसिया ''चिह्नों, अद्‌भुत कामों और चंगाइयों'' पर ज़ोर देती है, तो यह अपने स्थान से भटक गई है! किसी लहर की वास्तविक परीक्षा का एकमात्र ढंग यह पता लगाना है कि वह इसकी शिक्षाएं परमेश्वर के वचन की सच्चाई से मेल खाती हैं या नहीं। परमेश्वर की सामर्थ दिखाई देने वाले चिह्नों या अद्‌भुत कामों के द्वारा नहीं, बल्कि शांतपूर्ण भक्ति भरे आत्मा के द्वारा संचालित जीवन में दिखाई देती है!